मार्कफिल्ड हायब्रीड सीड्स प्रा. लि.
बी-३, अतिरिक्त औद्योगिक वसाहत, जालना, कस्टमर केअर . मो. क्र. ९४०५७८२६६८

पिक:- भेंडी

वाण :- **अर्का अनामिका, अर्का अभय, रोहिणी, मोहिनी, श्रध्दा, अर्चना, एम. बी. एस. 1, एम. बी. एस. 2, जुली, तपस्या, ऐश्वर्या, एम. बी. एस. 09, एम. बी. एस. 10, एम. बी. एस.12, एम. बी. एस. 070, आणि ग्रीन चॅलेंजर.**

हवामान :- भेंडी हे उष्ण व दमट हवामानात येणारे पीक आहे. २० ते ४० अंश. सेल्सिअस तापमान असल्यास बियांची उगवण व झाडांची योग्य वाढ होते व फुलगळ होत नाही. १० अंश सेल्सिअस पेक्षा कमी तापमानाचा उगवणीवर परिणाम होतो. समशीतोष्ण व भरपूर सूर्यप्रकाश असलेले हवामान उपयुक्त.

जमिनीची मशागत :- जमीन नांगरणी करून कुळवणी करण्या अगोदर 25-30 टन चांगले कुजलेले शेणखत मिसळून घ्यावे.

जमिनीची निवड :- सुपीक चांगला पाण्याचा निचरा होणाऱ्या मध्यम काळ्या जमिनीमध्ये भेंडीचे पीक चांगले येते.

बीज प्रक्रिया वेळ/ रासायनिक औषधे :- गाऊचो 70 डब्लु. एस. 10 ग्रॅम/ किलो बियाणास ओलसर करून लावावे व अर्धा ते एक तास सावली मध्ये सुकवुन घ्यावे.

पेरणीची वेळ:- खरीप हंगाम: जून-जुलै; रब्बी: सप्टेंबर-ओक्टोबर, उन्हाळी: जानेवारी-फेब्रुवारी

बियाण्याचा दर:- भेंडीला उन्हाळी हंगामात दर हेक्टरी 3.5.-5..5 किलो बियाणे आणि खरिफपाच्या पिकासाठी 8 ते १० किलो बियाणे लागते..

पेरणीची पद्धत :- बियाण्याची लागवड करण्यापूर्वी जमीन भिजून घ्यावी व वापसा आल्यावर ओलसर जमिनीत बी टोकून लावावे. दोन ओळीतील अंतर 60 ते 90 सें. मी., दोन रोपांतील अंतर 30 सें. मी.,असावे.

बियाणे उगवण्यासाठी तापमान:- 28-32 ^{O}C.

रासायनिक खत मात्रा व खत देण्याचा कालावधी व वेळ

अ. क्र.	कालावधी	नत्र प्रमाण प्रति हेक्टरी	स्फुरद प्रमाण प्रति हेक्टरी	पालाश प्रमाण प्रति हेक्टरी
1	पेरणीच्या वेळी	50	50	50
2	30 दिवसानंतर	50	00	00
3	60 दिवसानंतर	50	00	00

तोडणी सुरु झाल्यानंतर दर २० दिवसांच्या अंतराने मॅग्नेशिअम सल्फेट (30 ग्रॅम) + झिंक सल्फेट (30 ग्रॅम) + बोरॉन (20 ग्रॅम) + १९:१९:१९ (50 ग्रॅम) प्रति १० लि. पाण्यात फवारणी केल्यास उत्पन्नात वाढ होऊन पिकाचा दर्जा सुधारते.

रोग व कीड नियंत्रण : खतासोबत फरटेरा (डूपौंड) 4 किलो प्रति एकरी किंवा व्हर्टिको (सिंजेंटा) 2.5 किलो प्रति एकरी या दराने वापरल्यास सुमारे 21 दिवस मावा व तुडतुडे पासून चांगले संरक्षण मिळते.

अ. क्र.	रोग/ कीड	औषधाचे नाव	मात्रा प्रति लिटर पाण्यात
1	भुरी	सल्फर	02 ग्रॅ प्रति लि.
2	पानांवरील ठिपके	डायथेन एम ४५	02 ग्रॅ प्रति लि.
3	रस शोषणारी किड	कॉन्फिडॉर	04 मि. ली प्रति 10 लि.
		एसिटामिप्रीड	02 ग्रॅ प्रति लि.
4	फळे पोखरनाऱ्या अळ्या	प्रोफेनोफॉस	01 मि. ली प्रति लि
		पॉलीट्रिन	01 मि. ली प्रति लि.
5	कोळी (माईट)	मॅजिस्टर	02 मि. ली प्रति लि.
		उमाइट	01 मि. ली प्रति लि.

तन नियंत्रण :- 2-3 वेळा कोळपणी व खुरपणी करणे.

पाणी व्यवस्थापन:- पावसाळ्यात पावसाचा अंदाज घेऊन पाणी देणे व उन्हाळ्यात 3-4 दिवसांच्या अंतराने पाणी देणे.

पीक काढणी किंवा कापणी :- भेंडी पिकास फुले आल्यावर 4-6 दिवसानंतर भेंडीची तोडणी करावी व एक- दोन दिवसाच्या अंतराने तोडणी करावी व त्यामधील चांगली भेंडी बाजारात पाठवावी.

सुचना :- कोणत्याही हवामानात (खास करून पावसाळ्यात) भेंडी पिकामध्ये अतिरिक्त वाढ थांबविण्यासाठी व फुलोरा वेळेवर येण्याकरीत पीक एक महिन्याचे झाल्यावर लिहोसीन (बी.ए. एस. एफ इंडिया लि) 10 मिली प्रति पंप या प्रमाणात फवारावे व पहिल्या फवारणीच्या 10 दिवसांनी दुसरी फवारणी करावी, तसेच फक्त यूरियाचा वापर करण्यास टाळावा.

टीप: वरील दिलेली माहिती हि आमच्या संशोधण केंद्रात घेतलेल्या चाचण्या वरून दिलेली आहे. यात जमीन, भोगोलिक हवामान, पिकाची नियोजन पद्धती इत्यादी कारणामुळे या मध्ये बदल होऊ शकतो.

मार्कफिल्ड हायब्रीड सीड्स प्रा. लि.
बी-३, अतिरिक्त औद्योगिक वसाहत, जालना, कस्टमर केअर मो. न. 9405782668

भिंडी

किस्में:- परभणी क्रांति ,अर्का अनामिका, अर्का अभय, रोहिणी, मोहिनी, श्रध्दा, अर्चना, एम. बी. एस. 1, एम. बी. एस. 2, जुली, आभा, एंजेल, तपस्या, ऐश्वर्या, एम. बी. एस. 09, एम. बी. एस. 10, एम. बी. एस. 12, एम. बी. एस. 070, आणि ग्रीन चॅलेंजर.

उपयुक्त जलवायु :- भिंडी की खेती के लिए उष्ण और नम जलवायु की आवश्यकता होती है. इसके बीजों के जमाव के लिए करीब 20 से 25 डिग्री सेन्टीग्रेट तापमान चाहिए होता है.

उपयुक्त भूमि :- भिंडी की खेती सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है, लेकिन हल्की दोमट मिट्टी अच्छी मानी जाती है. इससे जल निकास अच्छी तरह हो जाता है. बता दें कि इसकी खेती के लिए भूमि में कार्बनिक तत्व होना ज़रूरी है, साथ ही पी.एच.मान करीब 6 से 6.8 होना चाहिए.

खेत की तैयारी :- इसकी खेती में सबसे पहले खेत की 2 से 3 बार जुताई कर लें. इसके साथ ही खेत को भुरभुरा करके पाटा चला लें, ताकि खेत समतल हो जाए.

बीज उपचार:- बीजों की बुवाई से पहले गाऊचो 70 डब्लु. एस. 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचार करना चाहिए|
बिजाई का समय :- भिंडी को खरिफ, रबी और ग्रीष्मा तीनों हि मौसम में उगाया जाता है क्योकीं भिंडी एक दिवस निष्प्रभावी पौधा हैं.

बीज की मात्रा :- भिंडी को गर्मी के मौसम में लगभग 3.5-5.5 किलोग्राम बीज / हेक्टेयर और बरसात के मौसम में 8-10 किलोग्राम बीज / हेक्टेयर की आवश्यकता होती है
बुवाई का अंतर :- भिंडी की बुवाई कतारों में करनी चाहिए. ध्यान दें कि खेत में कतारों की दूरी करीब 60 से 90 सेमी होनी चाहिए. इसके साथ ही पौधों की दूरी करीब 30 से 45 सेमी की रखनी चाहिए.

खाद एवं उर्वरक:- खेत तैयार करते समय 25 से 30 टन प्रति हेक्टेयर गली सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट अवश्य मिटटी में मिलाएं

क्र.	रासायनिक खाद प्रति हेक्टेयर	नत्रजन (कि.ग्रा.)	फास्फोरस (कि.ग्रा.)	पोटाश (कि.ग्रा.)
1	बुवाई के समय	50	50	50
2	30 दिन बाद	50	00	00
3	60 दिन बाद	50	00	00

तुड़ाई के 20 दिन बाद मैग्नीशियम सल्फेट (30 ग्राम) + झिंक सल्फेट (30 ग्राम) + बोरॉन (20 ग्राम) + 19:19:19 (50 ग्राम) प्रति 10 लीटर पानी में छिड़काव करने से उपज बढ़ती है और फसल की गुणवत्ता में सुधार होता है।

रोग और कीट नियंत्रण
खाद के साथ फरटेरा (डूपौंड) 4 किलो प्रति एकडं अथवा व्हर्टिको (सिंजेंटा) 2.5 किलो प्रति एकडं इस प्रमाण से एस्तेमाल करणे से 21 दिन तक रस चुसानेवाले किट से संरक्षण मिलता है

क्र.	रोग/ कीट	नियंत्रण	मात्रा प्रति ली पाणी में
1	विल्ट	ॲलिएट	02 ग्राम प्रति ली.
2	पत्तों पर सफेद धब्बे	सल्फेक्स	02 ग्राम प्रति ली
		थायोनुट्री	02 ग्राम प्रति ली.
		रोको	01 ग्राम प्रति ली.
3	पत्तों पर धब्बा रोग	डायथेन एम ४५	02 ग्राम प्रति लि.
		अँट्राकॉल	02 ग्राम प्रति ली.
		टिल्ट	01 मि.ली. प्रति ली.
4	रस चुसानेवाले किट	कॉन्फिडॉर	04 मि. ली प्रति 10 ली
		ऊलाला	05 ग्राम प्रति 15 ली.
		दंतासु	02 ग्राम प्रति 15 ली.
5	शाख और फल का कीट	कोराजन	05 मि.ली. प्रति 15 ली.
		ट्रेसर	05 मि.ली. प्रति 15 ली.
6	लाल माईट	मॅजिस्टर	02 मि. ली प्रति ली
		उमाइट	01 मि. ली प्रति ली

पीत शिरा रोग (यलो वेन मोजैक वाइरस)- इस रोग से पत्तियों की शिराएं पीली पडने लगती है| पूरी पत्तियाँ और फल भी पीले रंग के हो जाते है| पौधे की बढवार रुक जाती है| इस रोग की रोकथाम के लिए कॉन्फिडॉर की 5 मिलीलीटर मात्रा का प्रति 15 लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें|

निराई-गुड़ाई: भिंडी के खेत को खरपतवार मुक्त रखना है, तो फसल की बुवाई के करीब 15 से 20 दिन बाद पहली निराई-गुड़ाई कर देना चाहिए. बता दें कि भिंडी के खेत में खरपतवार नियंत्रण के लिए रासायनिक का भी प्रयोग कर सकते हैं.

सिंचाई: गर्मियों में भिंडी फसल की सिंचाई 5 से 7 दिन के अंतराल पर करते रहना चाहिए. अगर खेत में नमी न हो, तो फसल की बुवाई से पहले भी एक सिंचाई कर सकते हैं.

तोड़ाई : भिंडी के फलों की तुड़ाई करीब 45 से 50 दिनों में शुरू कर देनी चाहिए. ध्यान दें कि तुड़ाई एक या दो दिन के अंतराल पर रोजाना तुड़ाई करें.

नोट: - किसी भी मौसम में (विशेष रूप से बरसात के मौसम में) भिंडी की अत्यधिक वृद्धि को रोकने के लिए और समय पर पुष्पन को सुनिश्चित करने के लिए, फसल के एक महीने के बाद लिहोसीन (बीएएसएफ इंडिया लिमिटेड) के 10 मिलीलीटर प्रति पंप का छिड़काव करें और दूसरा छिड़काव पहले छिड़काव के 10 दिन बाद करें। केवल यूरिया के उपयोग से बचें।

टिपण्णी :- उपरोक्त सभी जाणकारीया हमारे अनुसंधान केंद्र पर किये गये प्रयोग पर आधारित है. भिन्न स्थानो पर भिन्न मौसम, भूमी प्रकार एवं ऋतू के कारण उपरोक्त जाणकारी मे बदलाव आ सकता है.

Markfield Hybrid Seeds Pvt. Ltd.
B-3, Additional MIDC, Jalna, Customer Care Mo. No. 9405782668

Bhindi

Varieties:- Parbhani Kranti, Arka Anamika, Arka Abhay, Rohini, Mohini, Shraddha, Archana, MBS 1, MBS 2, Julie, Tapasya, Aishwarya, MBS 09, MBS 10, MBS 12, MBS 070, and Green Challenger.

Suitable climate:- Hot and humid climate is required for the cultivation of bhindi. A temperature of about 20 to 25 degree centigrade is required for the germination of its seeds.

Suitable soil:- Bhindi can be cultivated in all types of soil, but light loamy soil is considered good. It ensures good drainage of water. Please note that for its cultivation, it is necessary to have organic elements in the soil, as well as the pH value should be about 6 to 6.8.

Preparation of field:- In its cultivation, first of all plow the field 2 to 3 times. Along with this, make the field soft and use a patta so that the field becomes flat.

Seed treatment:- Before sowing the seeds, the seeds should be treated with Gaucho 70 W.S. 10 grams per kilogram of seed.

Sowing time:- Bhindi is grown in all three seasons, Kharif, Rabi and Summer, because Bhindi is a day-ineffective plant.

Amount of seeds:- Bhindi requires about 3.5-5.5 kg of seeds / hectare in summer season and 8-10 kg of seeds / hectare in rainy season.

Sowing distance:- Bhindi should be sown in rows. Note that the distance of rows in the field should be about 60 to 90 cm. Along with this, the distance between the plants should be about 30 to 45 cm.

Manure and Fertilizer:- While preparing the field, mix 25 to 30 tonnes of rotten cow dung manure or compost per hectare in the soil.

S. No.	Chemical fertilizer per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	At the time of sowing	50	50	50
2	After 30 days	50	00	00
3	After 60 days	50	00	00

Spraying of Magnesium sulphate (30 gm) + Zinc sulphate (30 gm) + Boron (20 gm) + 19:19:19 (50 gm) per 10 litres of water at 20 days after harvest increases the yield and improves the quality of the crop.

Disease and Pest Control : Along with fertilizers, Fertera (Dupond) 4 kg per acre or Vertico (Syngenta) 2.5 kg per acre is used. This provides protection from sucking pests for 21 days.

Sr No	Diseases/Pests	Control	Quantity per liter of water
1	Wilt	Aliett	02 gram per liter
2	Powdery mildew	Sulfex	02 gram per liter
		Thionutri	02 gram per liter
3	Leaf Spot	Rocco	01 gram per liter
		Dithane M 45	02 gram per liter
		Antracol	02 gram per liter
		Tilt	0.5 ml per liter
4	Sucking insects	Confidor	01 ml per liter
		Ulala	04 ml per 10 liters
		Dantasu	05 gram per 15 liters
5	Fruit and shoot Borer	Corajan	02 gram per 15 liters
		Tracer	05 ml per 15 liters
6	Red mite	Magister	05 ml per 15 liters
		Omite	02 ml per liter

Yellow Vein Mosaic Virus - Due to this disease, the veins of the leaves turn yellow. The entire leaves and fruits also turn yellow. The growth of the plant stops. To prevent this disease, spray 5 ml of Confidor in 15 liters of water.

Weeding: If the bhindi field is to be kept weed free, then the first weeding should be done about 15 to 20 days after sowing the crop. Please note that chemicals can also be used for weed control in the bhindi field.

Irrigation: In summer, the bhindi crop should be irrigated at an interval of 5 to 7 days. If there is no moisture in the field, then one irrigation can be done even before sowing the crop.

Picking: Plucking of bhindi fruits should be started in about 45 to 50 days. Note that picking should be done daily at an interval of one or two days.

Note: - In any season (especially in rainy season) to prevent excessive growth of okra and to ensure timely flowering, spray 10 ml per pump of Lihocin (BASF India Ltd.) after one month of harvest and second spraying 10 days after the first spray. Avoid using only urea.

Note: - All the above information is based on the experiment done at our research center. The above information may change due to different weather, soil type and season at different places.

માર્કફિલ્ડ હાઇબ્રિડ સીડ્સ પ્રા. લિ.
બી-૩, એડિશનલ એમઆઈડીસી, જાલના, કસ્ટમર કેર મો. નં. ૯૪૦૫૭૮૨૬૬૮

ભીંડા

જાતો :- અર્ક અનામિકા, અરકા અભય, રોહિણી, મોહિની, શ્રદ્ધા, અર્પના, એમ.બી. એસ. ૧, એમ.બી. S. 2, જુલી, તપસ્યા, ઐશ્વર્યા, M.B. એસ. ૦૯, એમ.બી. એસ. ૧૦, એમ.બી. એસ. ૧૨, એમ.બી. એસ. ૦૭૦, અને ગ્રીન યેલેન્જર.

યોગ્ય વાતાવરણ:- ભીંડાની ખેતી માટે ગરમ અને ભેજવાળી આબોહવા જરૂરી છે. તેના બીજના અંકુરણ માટે લગભગ 20 થી 25 ડિગ્રી સેન્ટીગ્રેડ તાપમાન જરૂરી છે.

યોગ્ય જમીન:- ભીંડાની ખેતી તમામ પ્રકારની જમીનમાં કરી શકાય છે, પરંતુ હળવી ગોરાડુ જમીન સારી માનવામાં આવે છે. આ પાણીના યોગ્ય નિકાલની ખાતરી કરે છે. તમને જણાવી દઈએ કે તેની ખેતી માટે જમીનમાં કાર્બનિક તત્વો હોવા જરૂરી છે, અને pH મૂલ્ય 6 થી 6.8 ની આસપાસ હોવું જોઈએ.

ખેતરની તૈયારી:- તેની ખેતી માટે, પહેલા ખેતરમાં 2 થી 3 વાર ખેડાણ કરો. આ સાથે, ખેતરને ઢીલું કરો અને તેને સમતળ કરો, જેથી ખેતર સમતળ બને.

બીજ માવજત:- બીજ વાવતા પહેલા, ગૌયો 70 ડબલ્યુ. એસનો ઉપયોગ કરો. પ્રતિ કિલોગ્રામ બીજ માટે 10 ગ્રામના દરે માવજત કરવી જોઈએ.

વાવણીનો સમય:- લેડીફિંગર ખરીફ, રવિ અને ઉનાળો ત્રણેય ઋતુઓમાં ઉગાડવામાં આવે છે કારણ કે લેડીફિંગર એક દિવસ-તટસ્થ છોડ છે.

બીજની માત્રા :- ભીંડાને ઉનાળાની ઋતુમાં લગભગ ૩.૫-૫.૫ કિલો બીજ/હેક્ટર અને વરસાદની ઋતુમાં ૮-૧૦ કિલો બીજ/હેક્ટરની જરૂર પડે છે.
વાવણીનો તફાવત:- ભીંડા હરોળમાં વાવવા જોઈએ. ધ્યાનમાં રાખો કે ખેતરમાં હરોળ વચ્ચેનું અંતર લગભગ 60 થી 90 સે.મી. હોવું જોઈએ. આ સાથે, છોડ વચ્ચેનું અંતર લગભગ 30 થી 45 સે.મી. રાખવું જોઈએ.

ખાતર અને ખાતર:- ખેતર તૈયાર કરતી વખતે, પ્રતિ હેક્ટર 25 થી 30 ટન સડેલું ગાયનું છાણ ખાતર અથવા ખાતર જમીનમાં ભેળવો.

ના.	પ્રતિ હેક્ટર રાસાયણિક ખાતરો	નાઇટ્રોજન (કિલો)	નાઇટ્રોજન (કિલો)	પોટાશ (કિલો)
૧	વાવણી સમયે	૫૦	૫૦	૫૦
૨	૩૦ દિવસ પછી	૫૦	૫૦	૦૦
૩	૬૦ દિવસ પછી	૫૦	૫૦	૦૦

લણણીના 20 દિવસ પછી મેગ્નેશિયમ સલ્ફેટ (30 ગ્રામ) + ઝીંક સલ્ફેટ (30 ગ્રામ) + બોરોન (20 ગ્રામ) + 19:19:19 (50 ગ્રામ) પ્રતિ 10 લિટર પાણીમાં ભેળવીને છંટકાવ કરવાથી ઉપજમાં વધારો થાય છે અને પાકની ગુણવત્તામાં સુધારો થાય છે.

રોગ અને જીવાત નિયંત્રણ રાસાયણિક દવાનો ડોઝ અને સમય
ખાતર સાથે ફ્યુરેરા (ડુપોન્ડ) 4 કિલો પ્રતિ એકર અથવા વર્ટીકો (સિંજેન્ટા) 2.5 કિલો પ્રતિ એકરનો ઉપયોગ 21 દિવસ સુધી રસ ચૂસનારા જીવાતોથી રક્ષણ આપે છે.

ના.	રોગો/જીવાતો	નિયંત્રણ	પ્રતિ લિટર પાણીનો જથ્થો
૧	વિલ્ટ	એલયેટ	02 ગ્રામ પ્રતિ લિટર.
૨	પાંદડા પર સફેદ ફોલ્લીઓ	સલ્ફેક્સ	02 ગ્રામ પ્રતિ લિટર
		થિયોન્યુટ્રિશન	02 ગ્રામ પ્રતિ લિટર.
		બંધ	01 ગ્રામ પ્રતિ લિટર.
૩	પાનના ટપકાંનો રોગ	ડાયથેન એમ 45	02 ગ્રામ પ્રતિ લિટર.
		એન્ટ્રાકોલ	02 ગ્રામ પ્રતિ લિટર.
		ટિલ્ટ	૦૧ મિલી પ્રતિ લિટર
૪	રસ કાઢવાનો કીટ	કોન્ફિડોર	૦૪ મિનિટ ૧૦ લિટર દીઠ ૧ લિટર
		ચંદ્ર તરફ	૧૫ લિટર દીઠ ૦૫ ગ્રામ.
		દાંતનો દુખાવો	૧૫ લિટર દીઠ ૦૨ ગ્રામ.
૫	ડાળી અને ફળની જીવાત	કોરાઝોન	૧૫ લિટર દીઠ ૦૫ મિલી.
		ટ્રેસર	૧૫ લિટર દીઠ ૦૫ મિલી.
૬	લાલ જીવાત	મેજિસ્ટર	૦૨ મિનિટ લી પર લી
		ઉમીતે	૦૧ મિનિટ. લી પર લી

પીળી નસ રોગ (પીળી નસ મોઝેક વાયરસ) - આ રોગને કારણે પાંદડાની નસો પીળી થવા લાગે છે. આખા પાંદડા અને ફળો પણ પીળા પડી જાય છે. છોડનો વિકાસ અટકી જાય છે. આ રોગને રોકવા માટે, 15 લિટર પાણીમાં 5 મિલી કોન્ફિડોર ભેળવી છંટકાવ કરો.

નીંદણ:જો તમે ભીંડાના ખેતરને નીંદણ મુક્ત રાખવા માંગતા હો, તો પાક વાવ્યાના લગભગ 15 થી 20 દિવસ પછી પહેલું નીંદણ કરવું જોઈએ. ચાલો તમને જણાવી દઈએ કે લેડીફિંગરના ખેતરોમાં નીંદણ નિયંત્રણ માટે રસાયણોનો પણ ઉપયોગ કરી શકાય છે.

સિંચાઈ: ઉનાળામાં, ભીંડાના પાકને 5 થી 7 દિવસના અંતરે પિયત આપવું જોઈએ. જો ખેતરમાં ભેજ ન હોય તો પાક વાવતા પહેલા પણ સિંચાઈ કરી શકાય છે.

તોડવું: ભીંડાના ફળોની કાપણી લગભગ 45 થી 50 દિવસમાં શરૂ થવી જોઈએ. ધ્યાનમાં રાખો કે એક કે બે દિવસના અંતરે દરરોજ કાપણી કરવી જોઈએ.

નોંધ:- કોઈપણ હવામાનમાં (ખાસ કરીને વરસાદની ઋતુમાં) ભીંડાનો વધુ પડતો વિકાસ અટકાવવા અને સમયસર ફૂલ આવે તે માટે, પાકના એક મહિના પછી લિહોસિન (BASF ઇન્ડિયા લિ.) પ્રતિ પંપ ૧૦ મિલી છંટકાવ કરો અને બીજો છંટકાવ પ્રથમ છંટકાવના ૧૦ દિવસ પછી કરો. ફક્ત યુરિયાનો ઉપયોગ કરવાનું ટાળો.

નોંધ:- ઉપરોક્ત બધી માહિતી અમારા સંશોધન કેન્દ્રમાં કરવામાં આવેલા પ્રયોગો પર આધારિત છે. ઉપરોક્ત માહિતી અલગ અલગ સ્થળોએ અલગ અલગ આબોહવા, જમીનના પ્રકાર અને ઋતુઓને કારણે બદલાઈ શકે છે.

మార్క్‌ఫీల్డ్ హైబ్రిడ్ సీడ్స్ ప్రైవేట్ లిమిటెడ్.
B-3, అదనపు MIDC, జల్నా, కస్టమర్ కేర్ మో. నం. 9405782668

లేడీఫింగర్

రకాలు :- అర్కా అనామిక, అర్కా అభయ్, రోహిణి, మోహిని, శ్రద్ధ, అర్చన, M.B. ఎస్. 1, ఎం.బి. S. 2, జూలీ, తపస్య, ఐశ్వర్య, M.B. ఎస్. 09, ఎం.బి. ఎస్. 10, ఎం.బి. ఎస్. 12, ఎం.బి. S. 070, మరియు గ్రీన్ ఛాలెంజర్.

అనుకూలమైన వాతావరణం:- లేడీఫింగర్ సాగుకు వెచ్చని మరియు తేమతో కూడిన వాతావరణం అవసరం. దాని విత్తనాల అంకురోత్పత్తికి, దాదాపు 20 నుండి 25 డిగ్రీల సెంటీగ్రేడ్ ఉష్ణోగ్రత అవసరం.

అనువైన భూమి:- బెండకాయను అన్ని రకాల నేలల్లో సాగు చేయవచ్చు, కానీ తేలికపాటి లోమీ నేల మంచిదని భావిస్తారు. ఇది నీటి పారుదల సరిగ్గా జరిగేలా చేస్తుంది. దాని సాగుకు, నేలలో సేంద్రియ మూలకాలు ఉండటం అవసరమని మరియు pH విలువ 6 నుండి 6.8 వరకు ఉండాలని మీకు తెలియజేద్దాం.

పొలం తయారీ:- దాని సాగు కోసం, ముందుగా పొలాన్ని 2 నుండి 3 సార్లు దున్నండి. దీనితో పాటు, పొలాన్ని వదులుగా చేసి, సమం చేయండి, తద్వారా పొలం సమం అవుతుంది.

విత్తన శుద్ధి:- విత్తనాలు విత్తే ముందు, గౌచో 70 W. S. ఉపయోగించండి. కిలోగ్రాము విత్తనానికి 10 గ్రాముల చొప్పున చికిత్స చేయాలి.

విత్తే సమయం:- లేడీఫింగర్ ఒక పగటిపూట తటస్థ మొక్క కాబట్టి లేడీఫింగర్‌ను ఖరీఫ్, రబీ మరియు వేసవి మూడు సీజన్లలో పండిస్తారు.

విత్తన పరిమాణం:- వేసవి కాలంలో బెండకాయకు హెక్టారుకు 3.5-5.5 కిలోల విత్తనాలు మరియు వర్షాకాలంలో హెక్టారుకు 8-10 కిలోల విత్తనాలు అవసరం.
విత్తే అంతరం:- బెండకాయలను వరుసలలో విత్తాలి. పొలంలో వరుసల మధ్య దూరం 60 నుండి 90 సెం.మీ ఉండాలని గుర్తుంచుకోండి. దీనితో పాటు, మొక్కల మధ్య దూరం 30 నుండి 45 సెం.మీ. వరకు ఉంచాలి.

ఎరువు మరియు ఎరువులు:- పొలాన్ని సిద్ధం చేసేటప్పుడు, హెక్టారుకు 25 నుండి 30 టన్నుల కుళ్ళిన ఆవు పేడ ఎరువు లేదా కంపోస్ట్ ను నేలలో కలపండి.

లేదు.	హెక్టారుకు రసాయన ఎరువులు	నత్రజని (కి.గ్రా)	భాస్వరం (కి.గ్రా)	పొటాష్ (కిలోలు)
1.	విత్తే సమయంలో	50	50	50
2	30 రోజుల తర్వాత	50	0	0
3	60 రోజుల తర్వాత	50	0	0

పంట కోసిన 20 రోజుల తర్వాత 10 లీటర్ల నీటికి మెగ్నీషియం సల్ఫేట్ (30 గ్రాములు) + జింక్ సల్ఫేట్ (30 గ్రాములు) + బోరాన్ (20 గ్రాములు) + 19:19:19 (50 గ్రాములు) కలిపి పిచికారీ చేయడం వల్ల దిగుబడి పెరుగుతుంది మరియు పంట నాణ్యత మెరుగుపడుతుంది.

వ్యాధి మరియు తెగులు నియంత్రణ రసాయన ఔషధం యొక్క మోతాదు మరియు సమయం
ఎకరానికి 4 కిలోల ఫెర్టెరా (డూపాండ్) లేదా ఎకరానికి 2.5 కిలోల వెర్టికో (సింజెంటా) ను ఎరువుతో కలిపి వాడటం వలన 21 రోజుల పాటు రసం పీల్చే తెగుళ్ల నుండి రక్షణ లభిస్తుంది.

లేదు.	వ్యాధులు/ తెగుళ్ళు	నియంత్రణ	లీటరు నీటి పరిమాణం
1.	విల్ట్	అల్లిట్	లీటరుకు 02 గ్రాములు.
2	ఆకులపై తెల్లని మచ్చలు	సల్ఫెక్స్	లీటరుకు 02 గ్రాములు
		థియోనూట్రిషన్	లీటరుకు 02 గ్రాములు.
		ఆపు	లీటరుకు 01 గ్రాములు.
3	ఆకు మచ్చ వ్యాధి	డయాథెన్ M 45	లీటరుకు 02 గ్రాములు.
		ఆంట్రాకోల్	లీటరుకు 02 గ్రాములు.
		టిల్ట్	లీటరుకు 01 మి.లీ.
4	రసం తీసే కిట్	కాన్ఫిడర్	04 నిమి. 10 లీటర్లకు 1 లీటరు
		చంద్రునికి	15 లీటర్లకు 05 గ్రాములు.
		పంటి నొప్పి	15 లీటర్లకు 02 గ్రాములు.
5	కొమ్మలు మరియు పండ్ల తెగులు	కొరజోన్	15 లీటర్లకు 05 మి.లీ.
		ట్రేసర్	15 లీటర్లకు 05 మి.లీ.
6	ఎర్ర నల్లి (బ్రెడ్ మైట్)	మాజిస్టర్	02 నిమి. లీ పర్ లీ
		ఉమైట్	01 నిమి. లీ పర్ లీ

పసుపు సిర వ్యాధి (పసుపు సిర మొజాయిక్ వైరస్) - ఈ వ్యాధి కారణంగా ఆకుల సిరలు పసుపు రంగులోకి మారడం ప్రారంభిస్తాయి. మొత్తం ఆకులు మరియు పండ్లు కూడా పసుపు రంగులోకి మారుతాయి. మొక్క పెరుగుదల ఆగిపోతుంది. ఈ వ్యాధి నివారణకు, 5 మి.లీ. కాన్ఫిడర్‌ను 15 లీటర్ల నీటిలో కలిపి పిచికారీ చేయాలి.

కలుపు తీయుట: లేడీఫింగర్ పొలంలో కలుపు మొక్కలు లేకుండా ఉండాలంటే, పంట విత్తిన 15 నుండి 20 రోజుల తర్వాత మొదటి కలుపు తీయాలి. లేడీఫింగర్ పొలాలలో కలుపు నియంత్రణకు రసాయనాలను కూడా ఉపయోగించవచ్చని మీకు తెలియజేద్దాం.

నీటిపారుదల: వేసవిలో, లేడీఫింగర్ పంటకు 5 నుండి 7 రోజుల వ్యవధిలో నీరు పెట్టాలి. పొలంలో తేమ లేకపోతే, పంట విత్తడానికి ముందే నీరు పెట్టవచ్చు.

విరిగిపోవడం: లేడీఫింగర్ పండ్ల కోత దాదాపు 45 నుండి 50 రోజుల్లో ప్రారంభించాలి. గుర్తుంచుకోండి, ప్రతిరోజూ ఒకటి లేదా రెండు రోజుల వ్యవధిలో కోత కోయాలి.

గమనిక:- ఏ వాతావరణంలోనైనా (ముఖ్యంగా వర్షాకాలంలో) ఒక్రా అధిక పెరుగుదలను నివారించడానికి మరియు సకాలంలో పుష్పించేలా చూడటానికి, పంట వేసిన ఒక నెల తర్వాత లిహోసిన్ (BASF ఇండియా లిమిటెడ్) పంపుకు 10 మి.లీ. చొప్పున పిచికారీ చేయండి మరియు మొదటి స్ప్రే తర్వాత 10 రోజుల తర్వాత రెండవ స్ప్రే చేయాలి. యూరియాను మాత్రమే వాడటం మానుకోండి.
గమనిక:- పైన పేర్కొన్న సమాచారమంతా మా పరిశోధన కేంద్రంలో నిర్వహించిన ప్రయోగాల ఆధారంగా ఇవ్వబడింది. పైన పేర్కొన్న సమాచారం వేర్వేరు ప్రదేశాలలో వేర్వేరు వాతావరణం, నేల రకం మరియు రుతువుల కారణంగా మారవచ్చు.

ಮಾರ್ಕ್‌ಫೀಲ್ಡ್ ಹೈಬ್ರಿಡ್ ಸೀಡ್ಸ್ ಪ್ರೈ.ಲಿ. ಲಿಮಿಟೆಡ್.
ಬಿ-3, ಹೆಚ್ಚುವರಿ ಕೈಗಾರಿಕಾ ಎಸ್ಟೇಟ್, ಜಲ್ನಾ, ಕಸ್ಟಮರ್ ಕೇರ್ ಎಂಡಿ. ಸಂಖ್ಯೆ. 9405782668

ಲೇಡಿಫಿಂಗರ್

ಪ್ರಭೇದಗಳು :- ಅರ್ಕಾ ಅನಾಮಿಕಾ, ಅರ್ಕಾ ಅಭಯ್, ರೋಹಿಣಿ, ಮೋಹಿನಿ, ಶ್ರದ್ಧಾ, ಅರ್ಚನಾ, ಎಂ.ಬಿ. ಎಸ್. 1, ಎಂ.ಬಿ. ಎಸ್. 2, ಜೂಲಿ, ತಪಸ್ಯ, ಐಶ್ವರ್ಯ, ಎಂ.ಬಿ. ಎಸ್. 09, ಎಂ.ಬಿ. ಎಸ್. 10, ಎಂ.ಬಿ. ಎಸ್. 12, ಎಂ.ಬಿ. S. 070, ಮತ್ತು ಗ್ರೀನ್ ಚಾಲೆಂಜರ್.

ಸೂಕ್ತವಾದ ಹವಾಮಾನ:- ಬೆಂಡೆಕಾಯಿ ಕೃಷಿಗೆ ಬೆಚ್ಚಗಿನ ಮತ್ತು ಆರ್ದ್ರ ವಾತಾವರಣದ ಅಗತ್ಯವಿದೆ. ಅದರ ಬೀಜಗಳು ಮೊಳಕೆಯೊಡೆಯಲು, ಸುಮಾರು 20 ರಿಂದ 25 ಡಿಗ್ರಿ ಸೆಂಟಿಗ್ರೇಡ್ ತಾಪಮಾನ ಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ.

ಸೂಕ್ತವಾದ ಭೂಮಿ:- ಬೆಂಡೆಕಾಯಿಯನ್ನು ಎಲ್ಲಾ ರೀತಿಯ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಸಬಹುದು, ಆದರೆ ಹಗುರವಾದ ಲೋಮಿ ಮಣ್ಣು ಉತ್ತಮವೆಂದು ಪರಿಗಣಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ. ಇದು ನೀರಿನ ಸರಿಯಾದ ಒಳಚರಂಡಿಯನ್ನು ಖಚಿತಪಡಿಸುತ್ತದೆ. ಇದನ್ನು ಬೆಳೆಸಲು, ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಸಾವಯವ ಅಂಶಗಳು ಇರುವುದು ಅವಶ್ಯಕ, ಮತ್ತು pH ಮೌಲ್ಯವು ಸುಮಾರು 6 ರಿಂದ 6.8 ಆಗಿರಬೇಕು ಎಂದು ನಾವು ನಿಮಗೆ ಹೇಳೋಣ.

ಹೊಲ ಸಿದ್ಧತೆ:- ಅದರ ಕೃಷಿಗಾಗಿ, ಮೊದಲು ಹೊಲವನ್ನು 2 ರಿಂದ 3 ಬಾರಿ ಉಳುಮೆ ಮಾಡಿ. ಇದರೊಂದಿಗೆ, ಹೊಲವನ್ನು ಸಡಿಲಗೊಳಿಸಿ ಮತ್ತು ಅದನ್ನು ಸಮತಟ್ಟು ಮಾಡಿ, ಇದರಿಂದ ಹೊಲವು ಸಮತಟ್ಟಾಗುತ್ತದೆ.

ಬೀಜ ಸಂಸ್ಕರಣೆ:- ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತುವ ಮೊದಲು, ಗೌಚೊ 70 W. S. ಬಳಸಿ. ಪ್ರತಿ ಕಿಲೋಗ್ರಾಂ ಬೀಜಕ್ಕೆ 10 ಗ್ರಾಂ ದರದಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕರಣೆ ಮಾಡಬೇಕು.

ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯ: - ಲೇಡಿಫಿಂಗರ್ ಹಗಲು-ತಟಸ್ಥ ಸಸ್ಯವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಲೇಡಿಫಿಂಗರ್ ಅನ್ನು ಖಾರಿಫ್, ರಬಿ ಮತ್ತು ಬೇಸಿಗೆಯ ಮೂರು ಋತುಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಬೆಳೆಯಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಬೀಜದ ಪ್ರಮಾಣ:- ಬೇಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಬೆಂಡೆಕಾಯಿಗೆ ಹೆಕ್ಟೇರಿಗೆ ಸುಮಾರು 3.5-5.5 ಕೆಜಿ ಬೀಜಗಳು ಮತ್ತು ಮಳೆಗಾಲದಲ್ಲಿ ಹೆಕ್ಟೇರಿಗೆ 8-10 ಕೆಜಿ ಬೀಜಗಳು ಬೇಕಾಗುತ್ತವೆ.
ಬಿತ್ತನೆ ಅಂತರ:- ಬೆಂಡೆಕಾಯಿಯನ್ನು ಸಾಲುಗಳಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತಬೇಕು. ಹೊಲದಲ್ಲಿ ಸಾಲುಗಳ ನಡುವಿನ ಅಂತರವು ಸುಮಾರು 60 ರಿಂದ 90 ಸೆಂ.ಮೀ ಆಗಿರಬೇಕು ಎಂಬುದನ್ನು ನೆನಪಿನಲ್ಲಿಡಿ. ಇದರೊಂದಿಗೆ, ಸಸ್ಯಗಳ ನಡುವಿನ ಅಂತರವು ಸುಮಾರು 30 ರಿಂದ 45 ಸೆಂ.ಮೀ. ಆಗಿರಬೇಕು.

ಗೊಬ್ಬರ ಮತ್ತು ಗೊಬ್ಬರ:- ಹೊಲವನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವಾಗ, ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 25 ರಿಂದ 30 ಟನ್ ಕೊಳೆತ ಹಸುವಿನ ಸಗಣಿ ಗೊಬ್ಬರ ಅಥವಾ ಕಾಂಪೋಸ್ಟ್ ಅನ್ನು ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಮಿಶ್ರಣ ಮಾಡಿ.

ಕ್ರಮ ಸಂಖ್ಯೆ	ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ ರಾಸಾಯನಿಕ ಗೊಬ್ಬರಗಳು	ಸಾರಜನಕ (ಕೆಜಿ)	ರಂಜಕ (ಕೆಜಿ)	ಪೊಟ್ಯಾಶ್ (ಕೆಜಿ)
1	ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ	50	50	50
2	30 ದಿನಗಳ ನಂತರ	50	00	00
3	60 ದಿನಗಳ ನಂತರ	50	00	00

ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಿದ 20 ದಿನಗಳ ನಂತರ 10 ಲೀಟರ್ ನೀರಿಗೆ ಮೆಗ್ನೀಸಿಯಮ್ ಸಲ್ಫೇಟ್ (30 ಗ್ರಾಂ) + ಸತು ಸಲ್ಫೇಟ್ (30 ಗ್ರಾಂ) + ಬೋರಾನ್ (20 ಗ್ರಾಂ) + 19:19:19 (50 ಗ್ರಾಂ) ಸಿಂಪಡಿಸುವುದರಿಂದ ಇಳುವರಿ ಹೆಚ್ಚಾಗುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ಬೆಳೆಯ ಗುಣಮಟ್ಟ ಸುಧಾರಿಸುತ್ತದೆ.

ರೋಗ ಮತ್ತು ಕೀಟ ನಿಯಂತ್ರಣ ರಾಸಾಯನಿಕ ಔಷಧದ ಡೋಸೇಜ್ ಮತ್ತು ಸಮಯ
ಎಕರೆಗೆ 4 ಕೆಜಿ ಫರ್ಟೆರಾ (ಡುಪಾಂಡ್) ಅಥವಾ 2.5 ಕೆಜಿ ವರ್ಟಿಕೊ (ಸಿಂಜೆಂಟಾ) ಅನ್ನು ಗೊಬ್ಬರದೊಂದಿಗೆ ಬಳಸುವುದರಿಂದ 21 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ರಸ ಹೀರುವ ಕೀಟಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಣೆ ದೊರೆಯುತ್ತದೆ.

ಕ್ರಮ ಸಂಖ್ಯೆ	ರೋಗ/ಕೀಟ	ಔಷಧದ ಹೆಸರು	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್ ನೀರಿಗೆ ಪ್ರಮಾಣ
1	ವಿಲ್ಟ್	ಅಲ್ಲೆಟ್	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 02 ಗ್ರಾಂ.
2	ಎಲೆಗಳ ಮೇಲೆ ಬಿಳಿ ಚುಕ್ಕೆಗಳು	ಸಲ್ಫೆಕ್ಸ್	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 02 ಗ್ರಾಂ.
		ಥಿಯೋನ್ಯೂಟ್ರೆಷನ್	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 02 ಗ್ರಾಂ.
		ನಿಲ್ಲಿಸಿ	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 01 ಗ್ರಾಂ.
3	ಎಲೆ ಚುಕ್ಕೆ ರೋಗ	ಡಯಾಥೆನ್ ಎಂ 45	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 02 ಗ್ರಾಂ.
		ಅಂಟ್ರಾಕೋಲ್	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 02 ಗ್ರಾಂ..
		ಓರೆಯಾಗಿಸಿ	ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 01 ಮಿ.ಲೀ.
4	ರಸ ಹೀರುವ ಕೀಟಗಳು	ಕಾನ್ಫಿಡರ್	04 ನಿಮಿಷ. 10 ಲೀ ಗೆ 1 ಲೀಟರ್
		ಚಂದ್ರನಿಗೆ	15 ಲೀಟರ್‌ಗೆ 05 ಗ್ರಾಂ.
		ಹಲ್ಲುನೋವು	15 ಲೀಟರ್‌ಗೆ 02 ಗ್ರಾಂ.
5	ಶಾಖೆ ಮತ್ತು ಹಣ್ಣಿನ ಕೀಟ	ಕೊರಾಜನ್	15 ಲೀಟರ್‌ಗೆ 05 ಮಿಲಿ.
		ಟ್ರೇಸರ್	15 ಲೀಟರ್‌ಗೆ 05 ಮಿಲಿ.
6	ಕೆಂಪು ಮಿಟೆ	ಮಾಸ್ಟರ್	02 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ
		ಉಮ್ಮೆಟ್	01 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ

ಹಳದಿ ನಾಳ ರೋಗ (ಹಳದಿ ನಾಳ ಮೊಸಾಯಿಕ್ ವೈರಸ್) - ಈ ರೋಗದಿಂದಾಗಿ ಎಲೆಗಳ ನಾಳಗಳು ಹಳದಿ ಬಣ್ಣಕ್ಕೆ ತಿರುಗಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುತ್ತವೆ. ಸಂಪೂರ್ಣ ಎಲೆಗಳು ಮತ್ತು ಹಣ್ಣುಗಳು ಸಹ ಹಳದಿ ಬಣ್ಣಕ್ಕೆ ತಿರುಗುತ್ತವೆ. ಸಸ್ಯದ ಬೆಳವಣಿಗೆ ನಿಲ್ಲುತ್ತದೆ. ಈ ರೋಗವನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟಲು, 5 ಮಿಲಿ ಕಾನ್ಫಿಡರ್ ಅನ್ನು 15 ಲೀಟರ್ ನೀರಿಗೆ ಬೆರೆಸಿ ಸಿಂಪಡಿಸಿ.

ಕಳೆ ತೆಗೆಯುವುದು:ನೀವು ಲೇಡಿಫಿಂಗರ್ ಹೊಲವನ್ನು ಕಳೆ ಮುಕ್ತವಾಗಿಡಲು ಬಯಸಿದರೆ, ಬೆಳೆ ಬಿತ್ತಿದ ಸುಮಾರು 15 ರಿಂದ 20 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಮೊದಲ ಕಳೆ ತೆಗೆಯಬೇಕು. ಬೆಂಡೆಕಾಯಿ ಹೊಲಗಳಲ್ಲಿ ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣಕ್ಕೂ ರಾಸಾಯನಿಕಗಳನ್ನು ಬಳಸಬಹುದು ಎಂದು ನಾವು ನಿಮಗೆ ಹೇಳೋಣ.

ನೀರಾವರಿ:ಬೇಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ, ಲೇಡಿಫಿಂಗರ್ ಬೆಳೆಗೆ 5 ರಿಂದ 7 ದಿನಗಳ ಮಧ್ಯಂತರದಲ್ಲಿ ನೀರುಹಾಕಬೇಕು. ಹೊಲದಲ್ಲಿ ತೇವಾಂಶವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ, ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡುವ ಮೊದಲೇ ನೀರುಹಾಕಬಹುದು.

ಮುರಿಯುವುದು; ಲೇಡಿಫಿಂಗರ್ ಹಣ್ಣುಗಳ ಕೊಯ್ಲು ಸುಮಾರು 45 ರಿಂದ 50 ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಾರಂಭವಾಗಬೇಕು. ನೆನಪಿನಲ್ಲಿಡಿ, ಪ್ರತಿದಿನ ಒಂದು ಅಥವಾ ಎರಡು ದಿನಗಳ ಅಂತರದಲ್ಲಿ ಕೀಳಬೇಕು.

ಗಮನಿಸಿ:- ಯಾವುದೇ ಹವಾಮಾನದಲ್ಲಿ (ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಮಳೆಗಾಲದಲ್ಲಿ) ಬೆಂಡೆಕಾಯಿಯ ಅತಿಯಾದ ಬೆಳವಣಿಗೆಯನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟಲು ಮತ್ತು ಸಕಾಲಿಕವಾಗಿ ಹೂಬಿಡುವುದನ್ನು ಖಚಿತಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು, ಒಂದು ತಿಂಗಳ ಬೆಳೆ ನಂತರ ಲಿಹೋಸಿನ್ (ಬಿಎಎಸ್ಎಫ್ ಇಂಡಿಯಾ ಲಿಮಿಟೆಡ್) ಪಂಪ್‌ಗೆ 10 ಮಿಲಿ ಸಿಂಪಡಿಸಿ ಮತ್ತು ಮೊದಲ ಸಿಂಪಡಣೆಯ 10 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಎರಡನೇ ಸಿಂಪಡಣೆಯನ್ನು ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಯೂರಿಯಾವನ್ನು ಮಾತ್ರ ಬಳಸುವುದನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಿ.
ಗಮನಿಸಿ:- ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಮಾಹಿತಿಯು ನಮ್ಮ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ. ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ವಿವಿಧ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿನ ಹವಾಮಾನ, ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ ಮತ್ತು ಋತುಮಾನಗಳಿಂದಾಗಿ ಬದಲಾಗಬಹುದು.

মার্কফিল্ড হাইব্রিড ছিডছ্ প্রাইভেট লিমিটেড। লিমিটেড।
বি-৩, অতিৰিক্ত এম আই ডি চি, জালনা, কাষ্টমাৰ কেয়াৰ ম' নং ৯৪০৫৭৮২৬৬৮

লেডিফিংগাৰ

জাত :- আর্কা অনামিকা, আর্কা অভয়, ৰোহিনী, মোহিনী, শ্রদ্ধা, অর্চনা, এম.বি. এছ্ ১, এম.বি. এছ্ ২, জুলি, তপস্য, ঐশ্বর্য, এম.বি. এছ্ ০৯, এম.বি. এছ্ ১০, এম.বি. এছ্ ১২, এম.বি. এছ্ ০৭০, আৰু গ্রীণ চেলেঞ্জাৰ।

উপযুক্ত জলবায়ু:- লেডিফিংগাৰ খেতিৰ বাবে উষ্ণ আৰু আর্দ্র জলবায়ুৰ প্রয়োজন। ইয়াৰ বীজৰ অংকুৰণৰ বাবে প্রায় ২০ৰ পৰা ২৫ ডিগ্রী চেণ্টিগ্রেড উষ্ণতাৰ প্রয়োজন হয়।

উপযোগী ভূমি:- ভীমকলৰ খেতি সকলো ধৰণৰ মাটিত কৰিব পাৰি, কিন্তু পাতল লোমীয়া মাটি ভাল বুলি গণ্য কৰা হয়। ইয়াৰ ফলত পানীৰ সঠিক নিষ্কাশন নিশ্চিত হয়। কওঁ যে ইয়াৰ খেতিৰ বাবে মাটিত জৈৱিক মৌল থকাটো প্রয়োজনীয়, আৰু ইয়াৰ পি এইচ মান প্রায় ৬ৰ পৰা ৬.৮ হ'ব লাগে।

পথাৰ প্রস্তুতি:- ইয়াৰ খেতিৰ বাবে প্রথমে পথাৰখন ২ৰ পৰা ৩ বাৰ হাল বাইব লাগে। ইয়াৰ লগতে পথাৰখন ঢিলা কৰি সমতল কৰি লওক, যাতে পথাৰখন সমতল হৈ পৰে।

বীজ শোধন:- বীজ সিঁচাৰ আগতে গৌচো ৭০ ডব্লিউ এছ্ ব্যৱহাৰ কৰিব লাগে।প্রতি কিলোগ্রাম বীজত ১০ গ্রাম হাৰত শোধন কৰিব লাগে।

বীজ সিঁচাৰ সময়:- লেডিফিংগাৰ খৰিফ, ৰবি আৰু গ্রীষ্মকালত তিনিওটা ঋতুতে খেতি কৰা হয় কাৰণ লেডিফিংগাৰ এবিধ দিনৰ নিৰপেক্ষ উদ্ভিদ।

বীজৰ পৰিমাণ :- ভীমকলৰ বাবে গ্রীষ্মকালত প্রায় ৩.৫-৫.৫ কেজি বীজ/হেক্টৰ আৰু বাৰিষা কালত প্রতি হেক্টৰ ৮-১০ কেজি বীজৰ প্রয়োজন হয়
বীজ সিঁচাৰ ফাঁক:- ভীমকল শাৰী শাৰীকৈ সিঁচিব লাগে। মনত ৰাখিব যে পথাৰত শাৰীৰ মাজৰ দূৰত্ব প্রায় ৬০ৰ পৰা ৯০ চে.মি. ইয়াৰ লগতে গছ্ৰ মাজৰ দূৰত্ব প্রায় ৩০ৰ পৰা ৪৫ চে.মি.

গোবৰ আৰু সাৰ:- পথাৰ প্রস্তুত কৰাৰ সময়ত প্রতি হেক্টৰ মাটিত ২৫ৰ পৰা ৩০ টন পচি যোৱা গৰুৰ গোবৰ বা পচন সাৰ মিহলাই দিব লাগে।

নহয়।	প্রতি হেক্টৰত ৰাসায়নিক সাৰ	নাইট্রজেন (কিলোগ্রাম)	ফছ্ফৰাছ্ (কিলোগ্রাম)	পটাছ্ (কিলোগ্রাম)
১	বীজ সিঁচাৰ সময়ত	৫০	৫০	৫০
২	৩০ দিনৰ পিছত	৫০	০০	০০
৩	৬০ দিনৰ পিছত	৫০	০০	০০

শস্য চপোৱাৰ ২০ দিন পিছত প্রতি ১০ লিটাৰ পানীত মেগনেছিয়াম ছালফেট (৩০ গ্রাম) + জিংক ছালফেট (৩০ গ্রাম) + ব'ৰন (২০ গ্রাম) + ১৯:১৯:১৯ (৫০ গ্রাম) স্প্রে কৰিলে উৎপাদন বৃদ্ধি পায় আৰু শস্যৰ মান উন্নত হয়।
ৰোগ আৰু কীট-পতংগ নিয়ন্ত্রণ ৰাসায়নিক ঔষধৰ মাত্রা আৰু সময়
গোবৰৰ সৈতে প্রতি একৰত ৪ কেজিকৈ ফেৰটেৰা (ডুপণ্ড) বা ভাটিকো (চিঞ্জেন্টা) ২.৫ কিলোগ্রাম ব্যৱহাৰ কৰিলে ২১ দিনলৈ ৰস চুহি খোৱা কীট-পতংগৰ পৰা সুৰক্ষা পোৱা যায়।

নহয়।	ৰোগ/ কীট-পতংগ	নিয়ন্ত্রণ	প্রতি লিটাৰ পানীত পৰিমাণ
১	উইল্ট	এলিয়েট	প্রতি লিটাৰত ০২ গ্রাম।
২	পাতত বগা দাগ	ছ্যালফেক্স	প্রতি লিটাৰত ০২ গ্রাম
		থাইআ'নিউট্রিচন	প্রতি লিটাৰত ০২ গ্রাম।
		ৰ'ব	প্রতি লিটাৰত ০১ গ্রাম।
৩	পাতৰ দাগ ৰোগ	ডাইথেন এম ৪৫	প্রতি লিটাৰত ০২ গ্রাম।
		এণ্ট্রাকল	প্রতি লিটাৰত ০২ গ্রাম।
		হেলনীয়া	০১ মিলিলিটাৰ প্রতি লিটাৰত
৪	জুচ এক্সট্রেক্টৰ কিট	কনফিডৰ	০৪ মিনিট। প্রতি ১০ লিটাৰত লিটাৰ
		চন্দ্রলৈ	১৫ লিটাৰত ০৫ গ্রাম।
		দাঁতৰ বিষ	১৫ লিটাৰত ০২ গ্রাম।
৫	ডাল আৰু ফলৰ কীট	কোৰাজন	০৫ মিলিলিটাৰ প্রতি ১৫ লিটাৰত।
		ট্রেচাৰ	০৫ মিলিলিটাৰ প্রতি ১৫ লিটাৰত।
৬	ৰঙা মাইট	মেজিষ্টাৰ	০২ মিনিট। লি প্রতি লি
		উমিটে	০১ মিনিট। লি প্রতি লি

হালধীয়া শিৰাৰ ৰোগ (হালধীয়া শিৰাৰ মোজাইক ভাইৰাছ্) – এই ৰোগৰ বাবে পাতৰ শিৰা হালধীয়া হ'বলৈ আৰম্ভ কৰে। গোটেই পাত আৰু ফলবোৰো হালধীয়া হৈ পৰে। গছ্জোপাৰ বৃদ্ধি বন্ধ হৈ যায়। এই ৰোগ প্রতিৰোধৰ বাবে ১৫ লিটাৰ পানীত ৫ মিলিলিটাৰ কনফিডৰ স্প্রে কৰিব লাগে।

অপতৃণ; যদি আপুনি লেডিফিংগাৰৰ পথাৰখন অপতৃণমুক্ত কৰি ৰাখিব বিচাৰে তেন্তে শস্য বীজ সিঁচাৰ প্রায় ১৫ৰ পৰা ২০ দিনৰ পিছত প্রথম ঘাঁহ কাটিব লাগে। কওঁ যে লেডিফিংগাৰৰ পথাৰত অপতৃণ নিয়ন্ত্রণৰ বাবেও ৰাসায়নিক পদার্থ ব্যৱহাৰ কৰিব পাৰি।

জলসিঞ্চন: গ্রীষ্মকালত লেডিফিংগাৰ শস্যৰ জলসিঞ্চন ৫ৰ পৰা ৭ দিনৰ ব্যৱধানত কৰিব লাগে। যদি পথাৰত আর্দ্রতা নাথাকে তেন্তে শস্য বীজ সিঁচাৰ আগতেও জলসিঞ্চন কৰিব পাৰি।

ভাঙি যোৱা: লেডিফিংগাৰ ফল চপোৱাৰ কাম প্রায় ৪৫ৰ পৰা ৫০ দিনৰ ভিতৰত আৰম্ভ কৰিব লাগে। মনত ৰাখিব যে প্লাকিং দৈনিক এদিন বা দুদিনৰ ব্যৱধানত কৰিব লাগে।

বি:দ্র:- যিকোনো বতৰত (বিশেষকৈ বাৰিষা কালত) ভীমকলৰ অত্যধিক বৃদ্ধি ৰোধ কৰিবলৈ আৰু সময়মতে ফুল ফুলাটো নিশ্চিত কৰিবলৈ শস্যৰ এমাহৰ পিছত প্রতিটো পাম্পত লিহ'চিন (BASF India Ltd.) ১০ মিলিলিটাৰ স্প্রে' কৰিব লাগে আৰু প্রথম স্প্রে কৰাৰ ১০ দিনৰ পিছত দ্বিতীয়টো স্প্রে কৰিব লাগে। কেৰল ইউৰিয়া ব্যৱহাৰ নকৰিব।

বি:দ্র:- ওপৰৰ সকলো তথ্য আমাৰ গৱেষণা কেন্দ্রত কৰা পৰীক্ষাৰ ভিত্তিত কৰা হৈছে। বিভিন্ন স্থানত বিভিন্ন জলবায়ু, মাটিৰ প্রকাৰ আৰু ঋতুৰ বাবে ওপৰৰ তথ্যসমূহ ভিন্ন হ'ব পাৰে।

মার্কফিল্ড হাইব্রিড সিডস প্রাইভেট লিমিটেড
বি-৩, অতিরিক্ত এমআইডিসি, জালনা, কাস্টমার কেয়ার মো. নং ৯৪০৫৭৮২৬৬৮

ভদ্রমহিলা

জাত :- অর্ক অনামিকা, অর্ক অভয়, রোহিনী, মোহিনী, শ্রদ্ধা, অর্চনা, এম.বি. এস. ১, এম.বি. S. 2, জুলি, তপস্যা, ঐশ্বরিয়া, M.B. এস. ০৯, এম.বি. এস. ১০, এম.বি. এস. ১২, এম.বি. এস. ০৭০, এবং গ্রিন চ্যালেঞ্জার।

উপযুক্ত জলবায়ু:- লেডিফিঙ্গার চাষের জন্য উষ্ণ এবং আর্দ্র জলবায়ু প্রয়োজন। এর বীজ অঙ্কুরোদগমের জন্য প্রায় ২০ থেকে ২৫ ডিগ্রি সেন্টিগ্রেড তাপমাত্রা প্রয়োজন।

উপযুক্ত জমি:- ঢেঁড়স সব ধরণের মাটিতেই চাষ করা যায়, তবে হালকা দো-আঁশ মাটি ভালো বলে মনে করা হয়। এটি পানির সঠিক নিষ্কাশন নিশ্চিত করে। আসুন আমরা আপনাকে বলি যে এর চাষের জন্য, মাটিতে জৈব উপাদান থাকা প্রয়োজন এবং pH মান প্রায় 6 থেকে 6.8 হওয়া উচিত।

জমির প্রস্তুতি:- চাষের জন্য, প্রথমে জমি ২ থেকে ৩ বার চাষ করুন। এর সাথে, ক্ষেতটি আলগা করে সমান করুন, যাতে ক্ষেতটি সমান হয়ে যায়।

বীজ শোধন:- বীজ বপনের আগে, গাউচো ৭০ ওয়াট. এস ব্যবহার করুন। প্রতি কেজি বীজের জন্য ১০ গ্রাম হারে শোধন করতে হবে।

বপনের সময়:- লেডিফিঙ্গার খরিফ, রবি এবং গ্রীষ্ম এই তিন ঋতুতেই জন্মে কারণ লেডিফিঙ্গার একটি দিবা-নিরপেক্ষ উদ্ভিদ।

বীজের পরিমাণ :- গ্রীষ্মকালে ঢেঁড়সের জন্য হেক্টর/৩.৫-৫.৫ কেজি এবং বর্ষাকালে হেক্টর/৮-১০ কেজি বীজের প্রয়োজন হয়।
বপনের ব্যবধান:- ঢেঁড়স সারিতে বপন করতে হবে। মনে রাখবেন যে জমিতে সারির মধ্যে দূরত্ব প্রায় 60 থেকে 90 সেমি হওয়া উচিত। এর সাথে, গাছগুলির মধ্যে দূরত্ব প্রায় 30 থেকে 45 সেমি রাখতে হবে।

সার এবং সার:- ক্ষেত প্রস্তুত করার সময়, প্রতি হেক্টরে মাটিতে ২৫ থেকে ৩০ টন পচা গোবর সার বা কম্পোস্ট মিশিয়ে দিন।

না।	প্রতি হেক্টরে রাসায়নিক সার	নাইট্রোজেন (কেজি)	ফসফরাস (কেজি)	পটাশ (কেজি)
১	বপনের সময়	৫০	৫০	৫০
২	৩০ দিন পর	৫০	০০	০০
৩	৬০ দিন পর	৫০	০০	০০

ফসল কাটার ২০ দিন পর প্রতি ১০ লিটার পানিতে ম্যাগনেসিয়াম সালফেট (৩০ গ্রাম) + জিঙ্ক সালফেট (৩০ গ্রাম) + বোরন (২০ গ্রাম) + ১৯:১৯:১৯ (৫০ গ্রাম) স্প্রে করলে ফলন বৃদ্ধি পায় এবং ফসলের মান উন্নত হয়।
রোগ ও কীটপতঙ্গ নিয়ন্ত্রণ রাসায়নিক ওষুধের মাত্রা এবং সময়কাল
প্রতি একরে ফেরটেরা (ডুপন্ড) ৪ কেজি অথবা প্রতি একরে ভার্টিকো (সিনজেন্টা) ২.৫ কেজি সারের সাথে ব্যবহার করলে ২১ দিন ধরে রস চুষে নেওয়া পোকামাকড় থেকে সুরক্ষা পাওয়া যায়।

না।	রোগ/পোকামাকড়	নিয়ন্ত্রণ	প্রতি লিটার পানিতে পরিমাণ
১	শুকিয়ে যাওয়া	অ্যালিয়েট	প্রতি লিটারে ০২ গ্রাম।
২	পাতায় সাদা দাগ	সালফেক্স	০২ গ্রাম প্রতি লিটার
		থিওনুট্রিশন	প্রতি লিটারে ০২ গ্রাম।
		থামো	প্রতি লিটারে ০১ গ্রাম।
৩	পাতার দাগ রোগ	ডায়াথেন এম ৪৫	প্রতি লিটারে ০২ গ্রাম।
		অ্যান্ট্রাকল	প্রতি লিটারে ০২ গ্রাম।
		কাত হওয়া	০১ মিলি প্রতি লিটার
৪	রস নিষ্কাশনকারী কিট	কনফিডর	০৪ মিনিট। প্রতি ১০ লিটারে ১ লিটার
		চাঁদের দিকে	প্রতি ১৫ লিটারে ০৫ গ্রাম।
		দাঁত ব্যথা	প্রতি ১৫ লিটারে ০২ গ্রাম।
৫	শাখা এবং ফলের পোকামাকড়	কোরাজন	প্রতি ১৫ লিটারে ০৫ মিলি।
		ট্রেসার	প্রতি ১৫ লিটারে ০৫ মিলি।
৬	লাল মাকড়	ম্যাজিস্টার	০২ মিনিট। লি পার লি
		উমিতে	০১ মিনিট। লি পার লি

হলুদ শিরা রোগ (হলুদ শিরা মোজাইক ভাইরাস) - এই রোগের কারণে পাতার শিরা হলুদ হতে শুরু করে। সম্পূর্ণ পাতা এবং ফলও হলুদ হয়ে যায়। গাছের বৃদ্ধি বন্ধ হয়ে যায়। এই রোগ প্রতিরোধের জন্য, ১৫ লিটার পানিতে ৫ মিলি কনফিডর মিশিয়ে স্প্রে করুন।

আগাছা পরিষ্কার করা
যদি আপনি লেডিফিংগার ক্ষেতকে আগাছামুক্ত রাখতে চান, তাহলে ফসল বপনের প্রায় ১৫ থেকে ২০ দিন পরে প্রথম আগাছা পরিষ্কার করা উচিত। আসুন আমরা আপনাকে বলি যে লেডিফিংগার ক্ষেতে আগাছা নিয়ন্ত্রণের জন্যও রাসায়নিক ব্যবহার করা যেতে পারে।

সেচ
গ্রীষ্মকালে, লেডিফিঙ্গার ফসলে ৫ থেকে ৭ দিনের ব্যবধানে সেচ দিতে হবে। যদি জমিতে আর্দ্রতা না থাকে, তাহলে ফসল বপনের আগেও সেচ দেওয়া যেতে পারে।

ভাঙা
লেডিফিঙ্গার ফলের ফসল তোলা প্রায় ৪৫ থেকে ৫০ দিনের মধ্যে শুরু করা উচিত। মনে রাখবেন যে প্রতিদিন এক বা দুই দিনের ব্যবধানে গাছ কাটা উচিত।

দ্রষ্টব্য:- যেকোনো আবহাওয়ায় (বিশেষ করে বর্ষাকালে) ঢেঁড়সের অত্যধিক বৃদ্ধি রোধ করতে এবং সময়মতো ফুল ফোটানোর জন্য, ফসল তোলার এক মাস পর প্রতি পাম্পে ১০ মিলি লিহোসিন (BASF India Ltd.) স্প্রে করুন এবং প্রথম স্প্রে করার ১০ দিন পর দ্বিতীয় স্প্রে করুন। শুধুমাত্র ইউরিয়া ব্যবহার করা এড়িয়ে চলুন।

দ্রষ্টব্য:- উপরের সমস্ত তথ্য আমাদের গবেষণা কেন্দ্রে পরিচালিত পরীক্ষার উপর ভিত্তি করে। বিভিন্ন স্থানে বিভিন্ন জলবায়ু, মাটির ধরণ এবং ঋতুর কারণে উপরোক্ত তথ্যগুলি ভিন্ন হতে পারে।

ਮਾਰਕਫੀਲਡ ਹਾਈਬ੍ਰਿਡ ਸੀਡਜ਼ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਲਿਮਟਿਡ
ਬੀ-3, ਐਡੀਸ਼ਨਲ ਐਮਆਈਡੀਸੀ, ਜਾਲਨਾ, ਕਸਟਮਰ ਕੇਅਰ ਮੋ. ਨੰ. 9405782668

ਲੇਡੀਫਿੰਗਰ

ਕਿਸਮਾਂ:- ਅਰਕਾ ਅਨਾਮਿਕਾ, ਅਰਕਾ ਅਭੈ, ਰੋਹਿਣੀ, ਮੋਹਿਨੀ, ਸ਼ਰਧਾ, ਅਰਚਨਾ, ਐਮ.ਬੀ. ਐੱਸ. 1, ਐਮ.ਬੀ. ਐੱਸ.2, ਜੂਲੀ, ਤਪੱਸਿਆ, ਐਸ਼ਵਰਿਆ, ਐੱਮ.ਬੀ. ਐੱਸ. 09, ਐਮ.ਬੀ. ਐੱਸ. 10, ਐਮ.ਬੀ. ਸ. 12, ਐਮ.ਬੀ. ਐੱਸ. 070, ਅਤੇ ਗ੍ਰੀਨ ਚੈਲੇਂਜਰ।

ਢੁਕਵਾਂ ਜਲਵਾਯੂ:- ਭਿੰਡੀ ਦੀ ਖੇਤੀ ਲਈ ਗਰਮ ਅਤੇ ਨਮੀ ਵਾਲਾ ਜਲਵਾਯੂ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸਦੇ ਬੀਜਾਂ ਦੇ ਉਗਣ ਲਈ, ਲਗਭਗ 20 ਤੋਂ 25 ਡਿਗਰੀ ਸੈਂਟੀਗਰੇਡ ਤਾਪਮਾਨ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਢੁਕਵੀਂ ਜ਼ਮੀਨ:- ਭਿੰਡੀ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਪਰ ਹਲਕੀ ਦੋਮਟ ਮਿੱਟੀ ਚੰਗੀ ਮੰਨੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਪਾਣੀ ਦੀ ਸਹੀ ਨਿਕਾਸੀ ਨੂੰ ਯਕੀਨੀ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਤੁਹਾਨੂੰ ਦੱਸ ਦੇਈਏ ਕਿ ਇਸਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ, ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਜੈਵਿਕ ਤੱਤਾਂ ਦਾ ਹੋਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ, ਅਤੇ pH ਮੁੱਲ ਲਗਭਗ 6 ਤੋਂ 6.8 ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਖੇਤ ਦੀ ਤਿਆਰੀ:- ਇਸਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ, ਪਹਿਲਾਂ ਖੇਤ ਨੂੰ 2 ਤੋਂ 3 ਵਾਰ ਵਾਹੋ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ, ਖੇਤ ਨੂੰ ਢਿੱਲਾ ਕਰੋ ਅਤੇ ਇਸਨੂੰ ਪੱਧਰ ਕਰੋ, ਤਾਂ ਜੋ ਖੇਤ ਪੱਧਰਾ ਹੋ ਜਾਵੇ।

ਬੀਜ ਉਪਚਾਰ:- ਬੀਜ ਬੀਜਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ, ਗੌਂਚੋ 70 ਡਬਲਯੂ. ਐਸ. ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰੋ। ਉਪਚਾਰ 10 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ ਦੀ ਦਰ ਨਾਲ ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਸਮਾਂ:- ਲੇਡੀਫਿੰਗਰ ਤਿੰਨੋਂ ਮੌਸਮਾਂ ਸਾਉਣੀ, ਹਾੜ੍ਹੀ ਅਤੇ ਗਰਮੀਆਂ ਵਿੱਚ ਉਗਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਲੇਡੀਫਿੰਗਰ ਇੱਕ ਦਿਨ-ਨਿਰਪੱਖ ਪੌਦਾ ਹੈ।

ਬੀਜ ਦੀ ਮਾਤਰਾ:- ਭਿੰਡੀ ਨੂੰ ਗਰਮੀਆਂ ਦੇ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ ਲਗਭਗ 3.5-5.5 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ/ਹੈਕਟਰ ਅਤੇ ਬਰਸਾਤ ਦੇ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ 8-10 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ/ਹੈਕਟਰ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।
ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਅੰਤਰ:- ਭਿੰਡੀ ਨੂੰ ਕਤਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਬੀਜਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਧਿਆਨ ਰੱਖੋ ਕਿ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਕਤਾਰਾਂ ਵਿਚਕਾਰ ਦੂਰੀ ਲਗਭਗ 60 ਤੋਂ 90 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ, ਪੌਦਿਆਂ ਵਿਚਕਾਰ ਦੂਰੀ ਲਗਭਗ 30 ਤੋਂ 45 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਰੱਖਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।

ਖਾਦ ਅਤੇ ਖਾਦ:- ਖੇਤ ਤਿਆਰ ਕਰਦੇ ਸਮੇਂ, ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ 25 ਤੋਂ 30 ਟਨ ਸੜੀ ਹੋਈ ਗਾਂ ਦੀ ਖਾਦ ਜਾਂ ਖਾਦ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਮਿਲਾਓ।

ਨਹੀਂ।	ਰਸਾਇਣਕ ਖਾਦ ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ	ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ (ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ)	ਫਾਸਫੋਰਸ (ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ)	ਪੋਟਾਸ਼ (ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ)
1	ਬਿਜਾਈ ਦੇ ਸਮੇਂ	50	50	50
2	30 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ	50	00	00
3	60 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ	50	00	00

ਵਾਢੀ ਤੋਂ 20 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਮੈਗਨੀਸ਼ੀਅਮ ਸਲਫੇਟ (30 ਗ੍ਰਾਮ) + ਜ਼ਿੰਕ ਸਲਫੇਟ (30 ਗ੍ਰਾਮ) + ਬੋਰੋਨ (20 ਗ੍ਰਾਮ) + 19:19:19 (50 ਗ੍ਰਾਮ) ਪ੍ਰਤੀ 10 ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ ਘੋਲ ਕੇ ਛਿੜਕਾਅ ਕਰਨ ਨਾਲ ਝਾੜ ਵਧਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਫ਼ਸਲ ਦੀ ਗੁਣਵੱਤਾ ਵਿੱਚ ਸੁਧਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
ਬਿਮਾਰੀ ਅਤੇ ਕੀਟ ਨਿਯੰਤਰਣ ਰਸਾਇਣਕ ਦਵਾਈ ਦੀ ਖੁਰਾਕ ਅਤੇ ਸਮਾਂ
ਫਰਟੇਰਾ (ਡੂਪੋਂਡ) 4 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਜਾਂ ਵਰਟੀਕੋ (ਸਿੰਜੈਂਟਾ) 2.5 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਖਾਦ ਦੇ ਨਾਲ ਵਰਤਣ ਨਾਲ 21 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਰਸ ਚੂਸਣ ਵਾਲੇ ਕੀੜਿਆਂ ਤੋਂ ਸੁਰੱਖਿਆ ਮਿਲਦੀ ਹੈ।

ਨਹੀਂ।	ਬਿਮਾਰੀਆਂ/ਕੀੜੇ	ਨਿਯੰਤਰਣ	ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ ਦੀ ਮਾਤਰਾ
1	ਮੁਰਝਾ	ਐਲੀਟ	02 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ।
2	ਪੱਤਿਆਂ 'ਤੇ ਚਿੱਟੇ ਧੱਬੇ।	ਸਲਫੈਕਸ	02 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ
		ਥਿਓਨਟ੍ਰੀਸ਼ਨ	02 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ।
		ਰੂਕੋ	01 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ।
3	ਪੱਤਿਆਂ ਦੇ ਧੱਬਿਆਂ ਦੀ ਬਿਮਾਰੀ	ਡਾਇਥੇਨ ਐਮ 45	02 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ।
		ਐਂਟਰੈਕੋਲ	02 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ।
		ਝੁਕਾਅ	01 ਮਿ.ਲੀ. ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ
4	ਜੂਸ ਕੱਢਣ ਵਾਲਾ ਕਿੱਟ	ਕਨਫੀਡਰ	04 ਮਿੰਟ ਪ੍ਰਤੀ 10 ਲੀਟਰ
		ਚੰਦ ਵੱਲ	05 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ 15 ਲੀਟਰ।
		ਦੰਦ ਦਰਦ	02 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ 15 ਲੀਟਰ।
5	ਟਾਹਣੀਆਂ ਅਤੇ ਫਲਾਂ ਦੇ ਕੀੜੇ	ਕੋਰਾਜ਼ੇਨ	05 ਮਿ.ਲੀ. ਪ੍ਰਤੀ 15 ਲੀਟਰ।
		ਟਰੇਸਰ	05 ਮਿ.ਲੀ. ਪ੍ਰਤੀ 15 ਲੀਟਰ।
6	ਲਾਲ ਜੂੰ	ਮੈਜਿਸਟਰ	02 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪਰ ਲੀ
		ਉਮੀਤੇ	01 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪਰ ਲੀ

ਪੀਲੀ ਨਾੜੀ ਬਿਮਾਰੀ (ਪੀਲੀ ਨਾੜੀ ਮੋਜ਼ੇਕ ਵਾਇਰਸ) - ਇਸ ਬਿਮਾਰੀ ਕਾਰਨ ਪੱਤਿਆਂ ਦੀਆਂ ਨਾੜੀਆਂ ਪੀਲੀਆਂ ਹੋਣ ਲੱਗਦੀਆਂ ਹਨ। ਪੂਰੇ ਪੱਤੇ ਅਤੇ ਫਲ ਵੀ ਪੀਲੇ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਪੌਦੇ ਦਾ ਵਾਧਾ ਰੁਕ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਬਿਮਾਰੀ ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਲਈ, 5 ਮਿਲੀਲੀਟਰ ਕਨਫੀਡੋਰ ਨੂੰ 15 ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ ਘੋਲ ਕੇ ਛਿੜਕਾਅ ਕਰੋ।

ਨਦੀਨਨਾਸ਼ਕ
ਜੇਕਰ ਤੁਸੀਂ ਲੇਡੀਫਿੰਗਰ ਦੇ ਖੇਤ ਨੂੰ ਨਦੀਨ ਮੁਕਤ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੋ, ਤਾਂ ਪਹਿਲੀ ਗੋਡੀ ਫ਼ਸਲ ਬੀਜਣ ਤੋਂ ਲਗਭਗ 15 ਤੋਂ 20 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਤੁਹਾਨੂੰ ਦੱਸ ਦੇਈਏ ਕਿ ਲੇਡੀਫਿੰਗਰ ਦੇ ਖੇਤਾਂ ਵਿੱਚ ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਰੋਕਥਾਮ ਲਈ ਰਸਾਇਣਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵੀ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਸਿੰਚਾਈ
ਗਰਮੀਆਂ ਵਿੱਚ, ਲੇਡੀਫਿੰਗਰ ਦੀ ਫਸਲ ਦੀ ਸਿੰਚਾਈ 5 ਤੋਂ 7 ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਤਰਾਲ 'ਤੇ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਨਮੀ ਨਾ ਹੋਵੇ, ਤਾਂ ਫ਼ਸਲ ਬੀਜਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਵੀ ਸਿੰਚਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਤੋੜਨਾ
ਭਿੰਡੀ ਦੇ ਫਲਾਂ ਦੀ ਕਟਾਈ ਲਗਭਗ 45 ਤੋਂ 50 ਦਿਨਾਂ ਵਿੱਚ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਯਾਦ ਰੱਖੋ ਕਿ ਇੱਕ ਜਾਂ ਦੋ ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਤਰਾਲ 'ਤੇ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਛਾਂਟੀ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।

ਨੋਟ:- ਕਿਸੇ ਵੀ ਮੌਸਮ (ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਬਰਸਾਤ ਦੇ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ) ਭਿੰਡੀ ਦੇ ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਵਾਧੇ ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਲਈ ਅਤੇ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਫੁੱਲ ਆਉਣ ਨੂੰ ਯਕੀਨੀ ਬਣਾਉਣ ਲਈ, ਫਸਲ ਦੇ ਇੱਕ ਮਹੀਨੇ ਬਾਅਦ 10 ਮਿਲੀਲੀਟਰ ਪ੍ਰਤੀ ਪੰਪ ਲੀਹੋਸਿਨ (BASF ਇੰਡੀਆ ਲਿਮਟਿਡ) ਦਾ ਛਿੜਕਾਅ ਕਰੋ ਅਤੇ ਦੂਜੀ ਸਪਰੇਅ ਪਹਿਲੀ ਸਪਰੇਅ ਤੋਂ 10 ਦਿਨ ਬਾਅਦ ਕਰੋ। ਸਿਰਫ਼ ਯੂਰੀਆ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਚੋ।

ਨੋਟ:- ਉਪਰੋਕਤ ਸਾਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਡੇ ਖੋਜ ਕੇਂਦਰ ਵਿਖੇ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਯੋਗਾਂ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ। ਉਪਰੋਕਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਜਲਵਾਯੂ, ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਕਿਸਮ ਅਤੇ ਮੌਸਮਾਂ ਦੇ ਕਾਰਨ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ।